



भोर और बरखा

मीराबाई

पाठ के उद्देश्य

- मीराबाई के विषय में जानकारी प्राप्त करना ।
- ब्रज की भोर के विषय में जानना
- माँ यसोदा और पुत्र कृष्ण के प्रेम पूर्ण संबंध को जानना
- बरसात के आगमन पर होने वाले वातावरण का वर्णन कर सकेंगे ।

मीराबाई का जीवन परिचय:

- श्रीकृष्ण की महान भक्त और एक अद्वितीय कवयित्री के रूप में जानी जाने वाली मीराबाई का जन्म सन् 1498 में राजस्थान के मेड़ता में हुआ। इनके पति उदयपुर के महाराणा भोजराज थे। ये शादी के कुछ साल बाद ही विधवा हो गईं और कृष्ण-भक्ति में लीन हो गईं। इनकी मृत्यु के बारे में किसी को सटीक जानकारी नहीं है, लेकिन ऐसा माना जाता है कि ये अंत में श्रीकृष्ण भगवान की मूर्ति में ही समा गई थीं।

मीराबाई ने चार ग्रंथों की रचना की—

- बरसी का मायरा
- गीत गोविंद टीका
- राग गोविंद
- राग सोरठ के पद

मीराबाई जी ने इन पदों की रचना मुख्य रूप से गाने के लिए ही की थी । वह मंदिर में इन पदों का पूर्ण भाव के साथ गायन करती थी ।

भोर और बरखा

- मीरा बाई इस पद में यशोदा माँ द्वारा कान्हा जी को सुबह जगाने के दृश्य का वर्णन कर रही हैं। माता यशोदा कान्हा को तरह-तरह के प्रलोभन देकर उठाने का प्रयास कर रही हैं।
- मां यशोदा अपने पुत्र को प्रेम से कहती है –
- “जागो बंसीवारे ललना!”
- “जागो मोरे प्यारे!”



जा

गो बंसीवारे ललना!

जागो मोरे प्यारे!

रजनी बीती, भोर भयो है, घर-घर खुले किंवारे।
गोपी दही मथत, सुनियत हैं कंगना के झनकारे।।
उठो लालजी! भोर भयो है, सुर-नर ठाढ़े द्वारे।
ग्वाल-बाल सब करत कुलाहल, जय-जय सबद उचारै।।
माखन-रोटी हाथ मैंह लीनी, गडवन के रखवारे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सरण आयौ को तारै।।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सरण आयौ को तारै।।

माखन-रोटी हाथ मैंह लीनी, गडवन के रखवारे।

ग्वाल-बाल सब करत कुलाहल, जय-जय सबद उचारै।।

उठो लालजी! भोर भयो है, सुर-नर ठाढ़े द्वारे।

- यशोदा माता कान्हा जी से कहती हैं कि 'उठो कान्हा! रात खत्म हो गयी है और सभी लोगों के घरों के दरवाजे खुल गए हैं।
- माता यशोदा कान्हा को तरह-तरह के प्रलोभन देकर उठाने का प्रयास कर रही हैं जैसे सभी गोपियाँ दही को मथकर तुम्हारा मनपसंद मक्खन निकाल रही हैं जल्दी उठो और उसे खाओ ।
- हमारे दरवाज़े पर देवता और सभी मनुष्य तुम्हारे दर्शन करने के लिए इंतज़ार कर रहे हैं जल्दी से उनको दर्शन दो ।
- तुम्हारे सभी ग्वाल-मित्र हाथ में माखन-रोटी लिए द्वार पर खड़े हैं और तुम्हारी जय-जयकार कर रहे हैं।
- वो सब गाय चराने जाने के लिए तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं। इसलिए उठ जाओ कान्हा! और अपने मित्रों के साथ खेलो ,गाय चराने जाओ तुम ही गाय के रक्षक हो ।

बरसे बदरिया सावन की।
सावन की, मन-भावन की॥

सावन में उमग्यो मेरो मनवा, भनक सुनी हरि
आवन की। उमड़-घुमड़ चहुँदिस से आया, दामिन दमकै झर
लावन की॥

नन्हीं-नन्हीं बूँदन मेहा बरसे, शीतल पवन सुहावन की।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर! आनंद-मंगल गावन की॥



दूसरे पद में मीराबाई सावन का बड़ा ही मनमोहक चित्रण कर रही हैं।

- इस पद में उन्होंने कृष्ण के प्रति अपने प्रेम का वर्णन भी किया है।
- सावन के महीने में मनमोहक बरसात हो रही है। उमड़-घुमड़ कर बादल आसमान में चारों तरफ फैल जाते हैं, आसमान में बिजली भी कड़क रही है। आसमान से बरसात की नन्ही-नन्ही बूँदें बरस रही हैं। ठंडी हवा चल रही है, जो मीराबाई को ऐसा महसूस करवाती है, मानो श्रीकृष्ण खुद चलकर उनके पास आ रहे हैं।

मीरा को सावन मनभावन इसलिए लगने लगा क्योंकि यह खुशनुमा मौसम उन्हें प्रभु श्री कृष्ण के आगमन का अहसास महसूस करवाता है।

इस मौसम में प्रकृति बड़ी ही सुंदर हो जाती है और मीराबाई का मन प्रसन्न व उमंग से भर जाता है।

सावन आते ही गर्मी का प्रकोप कम हो जाता है। चारों तरफ घने काले बादल छाने लगते हैं।

आसमान में बिजलियाँ कड़कती हैं और बादल गरजते हैं।

कभी हल्की तो कभी तेज़ बरसात होती है और प्रकृति फल-फूल उठती है।

इस दौरान हवा में भीनी-भीनी खुशबू फैल जाती है और वो ठंडी व सुहानी लगने लगती है।